● **पढ़ो और गाओ :**

५. बंदर का धंधा

– नरेंद्र गोयल

जन्म : २१ अक्तूबर १९६३, पिलखुवा, गाजियाबाद (उ.प्र) **रचनाएँ :** गीत माला, गीतगंगा, गीतसागर, झूला झूलें, चींचीं चिड़ियाँ आदि।
परिचय : नरेंद्र गोयल जी आप बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता माने जाते हैं। आपने बालोपयोगी बहुत सारी रचनाएँ हिंदी जगत को दी हैं।
प्रस्तुत कविता में कवि ने वनौषधियों द्वारा होने वाले पारंपरिक उपचारों; उसके प्रभावों पर हास्य के माध्यम से प्रकाश डाला है।

हाथ लगा बंदर के एक दिन,
टूटा-फूटा आला।
झट बंदर ने पेड़ के नीचे,
कुरसी-मेज ला डाला।
भालू आकर बोला-मुझको,
खाँसी और जुकाम,
बंदर बोला-तुलसी पत्ते,
पीपल की जड़ थाम।
पानी में तुम इन्हें उबालो,
सुबह-शाम को लेना,
खाँसी जब छू-मंतर होए,
फीस तभी तुम देना।
बिल्ली बोली-मुझको आया,
एक सौ चार बुखार,
मैं शिकार पर कैसे जाऊँ,
जल्दी इसे उतार।

बंदर बोला-रस गिलोय का,
तीन बार तुम पीना,
कल से ही तुम डांस करोगी
ईना, मीना, डीना।
तभी लोमड़ी आकर बोली,
चिकना-सुंदर मुझे बनाओ,
मैं ही दीखूँ सबसे सुंदर
ऐसी बूटी लाओ।
बंदर बोला-घी कुँवार तुम
दोनों समय लगाओ,
चमकेगा कुंदन-सा चेहरा
फीस मुझे दे जाओ।
चल निकला बंदर का धंधा,
अब वह मौज मनाता,
अच्छी-अच्छी जड़ी-बूटियाँ,
जंगल से वह लाता।

L2HD9W

❑ विद्यार्थियों से कविता का साभिनय पाठ कराएँ। कविता के प्रसंगों का नाट्यीकरण कराएँ। शब्दयुग्मों की सूची बनवाएँ। जड़ी-बूटी से होने वाले लाभ पर चर्चा करें। हास्य कविताएँ पढ़वाएँ। रेखांकित किए शब्दों के अर्थ शब्दकोश से प्राप्त करने के लिए कहें।